दैनिक नगर छाया
आप की आवाज़.....
09/11/2022
WWW.nagarchhaya.com
कानपुर

पांच दिवसीय प्रशिक्षण के उपरांत डी कंपोजर एवं प्रमाण पत्र पाकर किसानों के खिले चेहरे

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण का समापन किया गया। यह प्रशिक्षण दिनांक 4 नवंबर 2022 को प्रारंभ किया गया था इस प्रशिक्षण में कुल 25 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह सभी प्रशिक्षणार्थी विकासखंड मैथा के विभिन्न गांव के रहने वाले हैं इस प्रशिक्षण में किसानों को फसल की पराली न जलाने के लिए प्रेरित किया गया। उपस्थित सभी प्रशिक्षणार्थियों ने न फसल अवशेष जलाएंगे न जलाने देंगे जैसे नारे लगाकर आवाज बुलंद की। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों को समय से गेहूं बुवाई करने तथा खरपतवार प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दिया तथा इस कार्यक्रम के आयोजक डॉ खलील खान ने गांव किसानों को सुपर सीडर तथा मल्चर का उपयोग को बताया। उन्होंने बताया की कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा लगातार किसानों को जागरूक किया जा रहा है जिससे पराली न जलाने के एक भी केस नहीं हुए हैं। गृह वैज्ञानिक डॉ मिथिलेश वर्मा ने किसानों को पराली का उपयोग सब्जी की फसल वह प्राकृतिक खेती में कैसे करें इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को पराली के भूसे द्वारा मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक किया तथा किसानों को पराली से वर्मी कंपोस्ट वह नाडेप कंपोस्ट बनाने की विधि को विस्तार से बताया व अंत में किसानों को प्रमाण पत्र वितरण कर इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक समापन किया गया। इस अवसर पर किसानों ने हाथ उठाकर पराली न जलाने की शपथ भी ली।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

राहुल ने गुरुद्वारे में मत्था टेककर शुरू की... 12

चंद्रग्रहण के मोक्षकाल में गंगा स्नान के लिए... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 29
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
बुधवार | 09 नवम्बर, 2022

किसानों को पराली न जलाने के लिए किया प्रेरित

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर चल रहे पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण का समापन बीते दिन मंगलवार को हुआ। जिसमें विकासखंड मैथा के विभिन्न गांवों के 25 प्रशिक्षणार्थी ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण में किसानों को फसल की पराली न जलाने के लिए प्रेरित किया गया। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रामप्रकाश ने किसानों को समय से गेहूं बुवाई करने तथा खरपतवार प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के आयोजक डॉ.खलील खान ने किसानों को सुपर सीडर तथा मल्चर के उपयोग के विषय में बताया। उन्होंने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा लगातार किसानों को जागरूक किया जा रहा है जिससे पराली जलाने के एक भी केस नहीं हुए हैं। गृह वैज्ञानिक डॉ.मिथिलेश वर्मा ने किसानों को प्राकृतिक खेती के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर किसानों को प्रमाण पत्र वितरण किए गए।

डी कंपोजर व प्रमाण पत्र पाकर खिले किसानों के चेहरे

अनिल मिश्रा (जनमत टुडे)

कानपुरः चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण का समापन किया गया। यह प्रशिक्षण दिनांक 4 नवंबर 2022 को प्रारंभ किया गया था इस प्रशिक्षण में कुल 25 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह सभी प्रशिक्षणार्थी विकासखंड मैथा के विभिन्न गांव के रहने वाले हैं इस प्रशिक्षण में किसानों को फसल की पराली न जलाने के लिए प्रेरित किया गया। उपस्थित सभी प्रशिक्षणार्थियों ने न फसल अवशेष जलाएंगे न जलाने देंगे जैसे नारे लगाकर आवाज बुलंद की। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों को समय से गेहूं बुवाई करने तथा खरपतवार प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दिया तथा इस कार्यक्रम के आयोजक डॉ खलील खान ने गांव किसानों को सुपर सीडर तथा मल्चर का उपयोग को बताया। उन्होंने बताया की कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा लगातार किसानों को जागरूक किया जा रहा है। जिससे पराली न जलाने के एक भी केस नहीं हुए हैं। गृह वैज्ञानिक डॉ मिथिलेश वर्मा ने किसानों को पराली का उपयोग सब्जी की फसल वह प्राकृतिक खेती में कैसे करें इसके बारे में जानकारी दी उन्होंने किसानों को पराली के भूसे द्वारा मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक किया तथा किसानों को पराली से वर्मी कंपोस्ट वह नाडेप कंपोस्ट बनाने की विधि को विस्तार से बताया व अंत में किसानों को प्रमाण पत्र वितरण कर इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक समापन किया गया। इस अवसर पर किसानों ने हाथ उठाकर पराली न जलाने की शपथ भी ली।

शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
www.shashwattimes.com
09 नवम्बर 2022
3

पांच दिवसीय प्रशिक्षण उपरांत डी कंपोजर एवं प्रमाण पत्र पा किसानों के खिले चेहरे

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर द्वारा संचालित दलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र पर आज पांच दिवसीय फसल अवशेष प्रबंधन योजना के अंतर्गत प्रशिक्षण का समापन किया गया। यह प्रशिक्षण दिनांक 4 नवंबर 2022 को प्रारंभ किया गया था इस प्रशिक्षण में कुल 25 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह सभी प्रशिक्षणार्थी विकासखंड मैथा के विभिन्न गांव के रहने वाले हैं इस प्रशिक्षण में किसानों को फसल की पराली न जलाने के लिए प्रेरित किया गया। उपस्थित सभी प्रशिक्षणार्थियों ने न फसल अवशेष जलाएंगे न जलाने देंगे जैसे नारे लगाकर आवाज बुलंद की। प्रशिक्षण में कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रामप्रकाश ने किसानों को समय से गेहूं बुवाई करने तथा खरपतवार प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दिया तथा इस कार्यक्रम के आयोजक डॉ खलील खान ने गांव किसानों को सुपर सीडर तथा मल्चर का उपयोग को बताया। उन्होंने बताया की कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा लगातार किसानों को जागरूक किया जा रहा है जिससे पराली न जलाने के एक भी केस नहीं हुए हैं। गृह वैज्ञानिक डॉ मिथिलेश वर्मा ने किसानों को पराली का उपयोग सब्जी की फसल वह प्राकृतिक खेती में कैसे करें इसके बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों को पराली के भूसे द्वारा मशरूम की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक किया तथा किसानों को पराली से वर्मी कंपोस्ट वह नाडेप कंपोस्ट बनाने की विधि को विस्तार से बताया व अंत में किसानों को प्रमाण पत्र वितरण कर इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक समापन किया गया। इस अवसर पर किसानों ने हाथ उठाकर पराली न जलाने की शपथ भी ली।

पीके [illegible] वार्ष्णेय रहे।

हिंदुस्तान 09/11/2022

सीएसए में गेहूं का सेंटर ऑफ एक्सीलेंस शुरू

कानपुर। सीएसए में एक साल से बंद चल रहे गेहूं के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस को शुरु कर दिया गया है। सेंटर में 12 वैज्ञानिकों की टीम गेहूं से जुड़े पांच क्षेत्रों पर काम करेगी। टीम में शामिल डॉ. विजय यादव ने बताया कि पांच क्षेत्रों में काम होगा, जिसमें गेहूं में जैव संवर्धन, ज्यादा गर्मी में सहनशील, देरी से बुवाई, विशेष मौसम में बोई जाने वाली और प्री बीडिंग प्रजातियां शामिल हैं।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • बुधवार • 9 नवम्बर • 2022

माणपत्र पाकर किसानों के खिले चेहरे

नपुर। सीएसए कृषि एवं द्योगिकी विवि के अधीन संचालित ीपनगर कृषि विज्ञान केन्द्र पर पांच सीय फसल अवशेष प्रवंधन क्षण कार्यक्रम के समापन पर लवार को संवंधित किसानों को कंपोजर व प्रशिक्षण प्रमाणपत्र दिये । कार्यक्रम में क्षेत्र के कुल 25 सानों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया व ल अवशेषों को न जलाकर खेतों ी मिलाने की शपथ भी ली। क्षण में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक राम प्रकाश ने किसानों को समय गेहूं की वुवाई करने तथा पतवार प्रवंधन की जानकारी दी। ोजक डॉ. खलील खान ने किसानों सुपर सीडर व व मल्चर का योग वताया। डॉ.मिथिलेश वर्मा ने सानों को पराली का उपयोग सव्जी ल उत्पादन में करने को लेकर रूक किया। किसानों को पराली भूसे द्वारा मशरूम की खेती करने प्रेरित किया गया। किसानों को ली से वर्मी कंपोस्ट व नाडेप ोस्ट वनाने की विधि को लेकर भी क्षित किया गया।

तक पहुंच गई। (ब्यूरो)

अमर उजाला 09/11/2022

जलवायु परिवर्तन ने बिगाड़ा फसलों का चक्र

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। जलवायु परिवर्तन का असर फसलों पर भी पड़ सकता है। दिन और रात के बीच औसत तापमान में अंतर सामान्य से अधिक होने की वजह से गेहूं के सामान्य बीज की बुआई से पैदावार प्रभावित हो सकती है। यही वजह है कि मौसम और कृषि विशेषज्ञ ज्यादा गर्मी सहन करने वाले बीजों का प्रयोग करने की सलाह दे रहे हैं। इसके लिए गेहूं की तीन प्रजातियां भी बाजार में आ गई हैं।

दिन-रात के तापमान का सामान्य अंतर बढ़ने से आ रही दिक्कत

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मौसम विभाग के अनुसार दिन और रात के तापमान में अंतर का यह सिलसिला पिछले चार वर्षों से ज्यादा तेज हुआ है। जो औसत अंतर पहले आठ से 12 डिग्री सेल्सियस का था, वह अब 18 से 20 डिग्री सेल्सियस हो गया है।

> गेहूं के बीज आमतौर पर 8 से 10 डिग्री के तापमान में अच्छी ढंग से अंकुरित होते हैं। इससे पैदावार भी बेहतर होती है। वर्ष 2018 से मौसम में बदलाव देखने को मिल रहा है, जिसका असर फसलों पर पड़ रहा है। **- डॉ. एसएन पांडेय, मौसम विभागाध्यक्ष, सीएसए**

सीएसए में एक साल से बंद गेहूं के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस को शुरू किया गया है। यहां 12 वैज्ञानिकों की टीम गेहूं की प्रजातियों को उन्नतशील बनाएगी।

■ गर्मी में भी अच्छी पैदावार देती हैं ये प्रजातियां

सीएसए वैज्ञानिकों की ओर से तैयार 1616 गेहूं की प्रजाति को सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ेगी और पैदावार भी 30 से 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक होगी। यह प्रजाति उच्च तापमान को सहन कर सकेगी। के-7903 (हलना) व के-9423 (उन्नत हलना), डीबीडब्ल्यू 187 (करण वंदना), डीबीडब्ल्यू 303 (करण वैष्णवी) व डीबीडब्ल्यू 71 जैसी किस्में हैं भी उच्च तापमान सह सकती हैं।